ला हाज़िर किया. फिर योगी को राजा ने कनारे ले जा पूछा गुसाईं जी! धर्म्मशास्त्र में स्त्रीके वास्ते क्या दंड लिखा है. तब योगी बोला महाराज! ब्राह्मण, गौ, स्त्री, लड़का और जो कोई अपने आसरे में हों; अगर उन में जिस किसू से कुछ खोटा काम हो, तो उन के वास्ते यह दंड लिखा है कि देस निकाला दीजिये.

यह सुन के राजा ने पद्मावती को डोली में सवार करवा, एक जंगल में छुड़वा दिया. फिर अपने मकाम से राजकुमार और दीवान का बेटा दोनों घोड़ों पर सवार हो, उस बन में जा, रानी पद्मावती को साथ ले, अपने शहर को चले. बअ्द चंद रोज़ के दोनों अपने अपने बाप पास जा पहुंचे. सब छोटे बड़ों को निहायत खुशी हुई; और ये बाहम ऐश करने लगे.

इतनी बात कह, बैताल ने राजा बीर बिक्रमाजीत (१) से पूछा, उन चारों में पाप किस को हुआ. जो तुम इस बात का न्याव न करोगे तो तुम नरक में पड़ोगे. राजा बिक्रम बोला, कि उस राजा को पाप हुआ. बैताल ने कहा राजा को किस तरह से पाप हुआ. बिक्रम ने यह उस को जवाब दिया, कि दीवान के बेटे ने तो अपने खाविंद का काम किया; और कोतवाल ने राजा का हुकम माना; और राजकन्या ने अपना मक़सद हासिल किया. इससे यह पाप राजा को हुआ कि बिना बिचारे उसे देस निकाला दिया. इतनी बात राजाके मुंह से सुन बैताल उसी दरख़त पर जा लटका.

(१) बिक्रमादित्य.

दूसरी कहानी.

राजा देखे, तो बैताल नहीं है. फिर उलटा फिरा, और उस जगह पहुंच, दरख़त पर चढ़, उस मुरदे को बांध, कांधे पर रख के ले चला. तब बैताल बोला, कि राजा! दूसरी कथा यों है,

कि यमुना के तीर, धर्म्मस्थल नाम एक नगर है; कि जहां का गुणाधिप नाम राजा. और वहां केशव नाम ब्राह्मण है कि वह यमुना के कनारे जप तप किया करता है. और उसकी बेटीका नाम मधुमावती.(१) वह बड़ी ख़ूबसूरत थी. जब व्याहने योग हुई, तब उस के माता, पिता, भाई तीनों उसकी शादी की फ़िक्र में थे. इत्तिफ़ाक़न, एक रोज़ उसका बाप किसी अपने जजमान के साथ शादी में कहीं गया था; और भाई उसका एक रोज़ गांव में गुरूके यहां पढ़ने, किंपीछे उन के घर में एक ब्राह्मण का लड़का आया. उस की मा ने उस लड़के का गुण रूप देखकर कहा, मैं अपनी लड़की की शादी तुझ से करूंगी. और वहां ब्राह्मण ने एक बमनेटे को बेटी देनी क़बूल की. और उस के बेटे ने, जहां पढ़ने गया था, वहां एक ब्राह्मण से बचन हारा कि अपनी बहन तुझे दूंगा.

कितने दिनों के पीछे, वे दोनों उन दोनों लड़कों को साथ ले आये. और यहां तीसरा लड़का आगे से बैठा था.

(१) मधुमालती.

एक का नाम विक्रम; दूसरे का नाम वामन; तीसरे का नाम मधुसूदन. वे तीनों रूप, गुण, विद्या, वेस में बराबर थे. उन्हों को देख ब्राह्मण चिन्ता करने लगा कि एक कन्या, और तीन वर; किसे दूं, किसे न दूं; और हम तीनों ने इन तीनों से वचन हारा है. अजब तरह की बात पेश आई; क्या कीजिये.

इस फ़िक्र में बैठा था, कि इतने में उस लड़की को सांपने डसा. वह मर गई. यह ख़बर सुन के, उसका बाप, भाई, वे तीनों लड़के, पांचों मिलकर बड़ी दौड़ धूप कर गुनी, गाडरू, जितने मंत्र से बिष के झाड़नेवाले थे, उन सब को लाये. उन सबों ने उस लड़की को देखकर कहा, यह जीने की नहीं. पहला यों बोला कि पंचमी, छठ, अष्टमी, नवमी, चौदस इन तिथोंमें सांप का काटा आदमी जीता नहीं. दूसरा बोला सनीचर, मंगलवार का डसा ऊआ भी जीता नहीं. तीसरा बोला रोहिणी, मघा, अश्लेषा, बिशाखा, मूल, कृत्तिका इन नक्षत्रों का बिष चढ़ा ऊआ उतरता नहीं. चौथा बोला इंद्री, अधर, कपोल, गला, कोख, नाभि इन अंगों का काटा ऊआ बचता नहीं. पांचवां बोला, यहां ब्रह्मा भी जिला नहीं सकता; हम किस गिनती में हैं. अब आप इस की गति कीजिये; हम बिदा होते हैं. यह कहकर, गुनी तो चले गये. और ब्राह्मण उस मुर्दे को ले जा, मसान में फूंक, आप तो चला गया.

फिर उस के पीछे उन तीनों जवानों ने यह किया, कि एक तो उन में से, उसकी जली ऊई हड्डियों को चुन बांध,

फ़क़ीर हो बन बन की सैर को गया. दूसरा, उसकी राख की गठरी बांध, वहीं झोंपड़ी बना रहने लगा. तीसरा जोगी हो झोली कंथा ले देस ब देस फिरने लगा. एक दिन किसू देस में एक ब्राह्मण के घर भोजन के लिये गया. वह गृहस्थी ब्राह्मण उसे देख के कहने लगा, अच्छा आज यहीं भोजन कीजिये. यह सुन के वहां बैठ गया. जिस वक्त रसोई तैयार ऊई, उसके हाथ पांव धुला ले जा चौके में बिठा, आप भी उसके पास बैठ गया. और उसकी ब्राह्मणी परोसने को आई. कुछ परोस गई, कुछ बाक़ी था; कि इतने में उस के छोटे लड़के ने रोकर अपनी मा का अंचल पकड़ा. वह छुड़ाती थी, और लड़का न छोड़ता था; और जों जों भुलाती थी, वह दूना दूना रोता और हट करता था. इस में उस ब्राह्मणी ने ख़फ़ा हो, लड़के को जलते चूल्हे में उठाकर फेंक दिया. वह लड़का जलकर ख़ाक हो गया.

यह अहवाल जब उस ब्राह्मण ने देखा, तो बिना खाये उठ खड़ा ऊआ. तब वह घरवाला बोला कि तू किसवास्ते भोजन नहीं करता. वह बोला कि जिसके घर में राक्षस काम हो, उसके घर में किस तरह से कोई भोजन करे. यह सुन, उस गृहस्थ ने उठकर एक और तरफ़ अपने घर में जा, और संजीवनी बिद्या की पोथी ला, उस में से एक मंत्र निकाल, जपकर लड़के को जिला दिया. तब वह ब्राह्मण, यह अजायब देख, अपने जी में चिंता करने लगा, जो यह पोथी मेरे हाथ लगे तो मैं भी अपनी प्यारी को

जिलाऊं. यह अपने मन में ठान, रसोई खा, वहीं रहा. गरज़, जब रात हुई, तो कितनी एक देर के पीछे सब ने ख्यालू किया; और अपनी अपनी जगह जा लेटे; उधर इधर की आपस में बातें करते थे. यह ब्राह्मण भी एक तरफ़ जाकर पड़ा रहा. लेकिन पड़ा पड़ा जागता था.

जब उसे जाना कि बड़ी रात गई, और सब सो गये; तब चुपका उठ, आहिस्ते आहिस्ते उस के घर में पैठ, वह पोथी ले चल दिया. और कितने दिनों में, जिस मसान में कि उस ब्राह्मण की बेटी को जलाया था, वहां आन पहुंचा. उन दोनों ब्राह्मणों को भी वहीं पाया, कि आपस में बैठे हुए बातें करते हैं. उन दोनों ने भी उसे पहचान, उसके पास आ, मुलाक़ात की; और पूछा कि भाई! तुम देस बिदेस तो फिरे, पर यह कहो कि कोई विद्या भी सीखी. वह बोला मैंने मृत्युसंजीवनी विद्या सीखी है यह सुनतेही बोला, जो सीखे हो तो हमारी प्यारी को जिलाओ. उसने कहा कि राख हाड़ का ढेर करो तो मैं जिला दूं. उन्होंने राख हड्डियां इकट्ठी कर दीं. तब उसने पोथी में से एक मंत्र निकाल जपा. वह कन्या जी उठी. फिर उन तीनों को कामदेव ने यह अंधा किया कि आपस में झगड़ने लगे.

इतनी बात कह कर, बैताल बोला ऐ राजा! यह बता कि वह स्त्री किसकी हुई. राजा बिक्रम बोला कि जो मंढी बांधकर रहा था, वह नारी उसी की हुई. बैताल बोला जो वह हाड़ न रखता तो वह किस तरह से जीती. और दूसरा विद्या न सीख आता तो वह क्योंकर उसे

जिलाता. राजा ने जवाब दिया कि जिसने उसकी हड्डियां रक्खी थीं वह तो उसके बेटे की जागह हुआ. और जिसने जीवदान दिया वह गोया उसका बाप हुआ. इसे वह जोरू उसी की हुई कि जो राख समेत झोंपड़ी बांध वहां रहा. यह जवाब सुन के, बैताल फिर उसी दरख़्त में जा लटका. राजा भी उसके पीछे पीछे जा पहुंचा. और उसे बांध कांधे पर रख फिर ले चला.

तीसरी कहानी.

बैताल बोला ऐ राजा! बर्दवान(१) नाम एक नगर है. उस में रूपसेन नाम एक राजा. एक रोज़ का इत्तिफ़ाक़ है, कि वह राजा अपनी डिऊढी के मुत्तसिल किसी मकान में बैठा था, कि दरवाज़े के बाहर से कुछ ऊपरी लोगों की आवाज़ आने लगी. राजा बोला कि दरवाज़े पर कौन है? और क्या शोर हो रहा है? इस में दरवान ने जवाब दिया महाराज! आपने यह भली बात पूछी; दौलतमंद की डिहुड़ी जान धन के लिये बहुतेरे आदमी आन बैठते हैं, और भांति भांति की बातें करते हैं. उन्ही लोगों का यह शोर है.

---

(१) वर्द्धमान.